Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.05, May,2025

महर्षि भरद्वाज का विमान-दर्शन

डॉ. बैकुण्ठ नाथ शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
संस्कृत विभाग,ने.मे.शि.ना.दास (पी.जी.) कॉलेज,बदायूँ

****

आमुख: *हमारी प्राचीन भारतीय परम्परा ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण रही है। वेद समस्त विद्याओं के भण्डार हैं, जिनसे प्राचीन एवं अर्वाचीन दर्शन प्रभावित हुए हैं। मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने अपनी दिव्य दृष्टि से तत्त्वों का साक्षात्कार किया और सृष्टि के निर्माण में उनके उपयोग का ज्ञान दिया। महर्षि भरद्वाज ने वेदों के अगाध समुद्र का मन्थन करके* ***'यन्त्रसर्वस्व'*** *नामक ग्रन्थ रचा, जिसमें विमान-विद्या का विस्तृत वर्णन है। इस ग्रन्थ के* ***'वैमानिकप्रकरण'*** *में विमानों के निर्माण, उड़ान तकनीक, चालक योग्यता, गति-नियंत्रण आदि का सूक्ष्म विवेचन किया गया है।विमान शास्त्र के अनुसार, विमान तीन प्रकार के होते थे—**मान्त्रिक** (मन्त्र-शक्ति से चलने वाले), **तान्त्रिक** (तन्त्र-औषधि से संचालित) और **यान्त्रिक** (यन्त्र-प्रधान)। रामायण में वर्णित **पुष्पक विमान** मान्त्रिक विमान का उत्कृष्ट उदाहरण है। महर्षि भरद्वाज के अलावा, नारायण, शौनक, गर्ग आदि ऋषियों ने भी विमानशास्त्र पर ग्रन्थों की रचना की। ऋग्वेद में भी विमानों के संकेत मिलते हैं, जैसे—**त्रिबन्धुरेण** (तीन सीट वाला), **त्रिचक्रेण** (तीन पहियों वाला) आदि।आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी प्राचीन भारतीय वैमानिकी को स्वीकार किया है। चार्ल्स बर्लित्ज़ जैसे विद्वानों ने माना है कि भारतीय ग्रन्थों में अत्याधुनिक विज्ञान के सिद्धान्त पहले से ही निहित हैं। अतः हमें अपने प्राचीन ज्ञान-विज्ञान पर गर्व करते हुए उसके अनुसन्धान एवं प्रसार का प्रयास करना चाहिए। यही हमारी सनातन संस्कृति की वास्तविक पहचान है।*

मुख्य शब्द: *वैमानिकी, यन्त्रसर्वस्व, महर्षि भरद्वाज, पुष्पक विमान, प्राचीन विज्ञान, वैदिक तकनीक*

****

हमारी प्राचीन परम्परा अनादि ज्ञान-विज्ञान से समृद्ध है। वेद समस्त सत्य विद्याओं के आकर एवं ज्ञान-विज्ञान के भण्डार हैं। हमारा सम्पूर्ण प्राचीन और अर्वाचीन दर्शन वेदों का ऋणी है। मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने अपनी दिव्य दृष्टि से तत्वों का साक्षात्कार किया और सृष्टि के निर्माण में उनके प्रयोग और उपयोग का उपदेश भी किया। हमारे वेद समस्त विद्या, कला धर्म, संस्कृति, विज्ञान, दर्शन, अर्थ, राजनीति, नीति आदि के आगार हैं। महर्षि भरद्वाज ने अपने मन-रूपी रश्मि (रस्सी) के माध्यम से बुद्धि-रूपी मन्दराचल द्वारा इस अगाध वेद-स्वरूप ज्ञानोदधि का मन्थन करके **'यन्त्रसर्वस्व'** नामक ग्रन्थ-रत्न प्राप्त किया और लोक कल्याण हेतु इसका उपयोग किया। स्पष्ट उल्लेख किया गया है-

"निर्मथ्य तद्वेदाम्बुधिं भरद्वाजो महामुनिः।
नवनीतं समुद्धृत्य यन्त्रसर्वस्वरूपकम्।।"
(यन्त्रसर्वस्व, वैमानिकप्रकरण-10)

विमान शब्द का अर्थ प्रतिपादित करते हुए महर्षि भरद्वाज एवं आचार्य विश्वम्भर ने कहा है,**"वि-पक्षी की भाँति गति के मान से एक देश से दूसरे देश, एक द्वीप से दूसरे द्वीप और एक लोक से दूसरे लोक को आकाश में उड़ान लेने या पहुँचने में समर्थ यान ही विमान है।"** विमान को पृथ्वी, जल और आकाश तोनों स्थानों में गति करने वाला बतलाया गया है। इसे त्रिपुर विमान कहा गया है। हमारी प्राचीन विमान-विद्या अत्यन्त उच्च तकनीकि से सम्पन्न थी। महर्षि भरद्वाजकृत **यन्त्रसर्वस्व** के **वैमानिकप्रकरण** में विमान के निर्माण, उसकी उड्डयन तकनीकि, विमानचालक की योग्यता एवं उसके प्रशिक्षण की प्रक्रिया, विमान की गति-सीमा, स्तम्भन, नियन्त्रण आदि के विषय में विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है। महर्षि भरद्वाजकृत **वैमानिक प्रकरण** से पूर्व विमानशास्त्र के छः ग्रन्थ- **विमानचन्द्रिका, व्योमयानतन्त्र, यन्त्रकल्प, यानविन्दु, खेटयानप्रदीपिका, व्योमयानार्कप्रकाश** थे। इन ग्रन्थों के लेखक क्रमशः **नारायण, शौनक, गर्ग, वाचस्पति, चाक्रायणि** और **धुण्डिनाथ** हैं।

युगभेद से विमानों के भी तीन प्रकार- **मान्त्रिक, तान्त्रिक और यान्त्रिक कहे** गए हैं। त्रेतायुग में **मान्त्रिक विमान** मन्त्र से सिद्ध

होते थे। द्वापर में **तान्त्रिक विमान** तन्त्र-प्रभाव (औषधि) से सिद्ध थे। और कलियुग में **यान्त्रिक विमान** यन्त्रकलापरायण होते हैं। **यन्त्रसर्वस्व** ग्रन्थ में महर्षि भरद्वाज ने मान्त्रिक विमान के 25 भेद बताए हैं। और **माणिभद्रिका** ग्रन्थ में गौतम ने इसके 32 भेद बताए हैं। **तान्त्रिक विमान** के 56 भेद बताए गए हैं। **यान्त्रिक विमान** 25 प्रकार के हैं। यान्त्रिक विमानों में पहला विमान **शकुन विमान** है। उसके पीठ, पङ्ख, पुच्छ आदि 28 अङ्गों का वर्णन, निर्माण प्रक्रिया, धातु-प्रयोग आदि का उल्लेख किया गया है। शकुन विमान में चार औष्म्य यन्त्र (इञ्जिन), वायु को खींचने के लिए चार वाताकर्षण यन्त्र और भूमि पर सञ्चरण करने के लिए चक्र भी लगाए गए हैं। दूसरा **सुन्दर विमान** है। उसमें **धूमोद्गम** आदि आठ अङ्गों की व्यवस्था है। रामायण में प्रसिद्ध **पुष्पक विमान** मान्त्रिक विमान के अन्तर्गत आता है। यह विमान आज भी आबालवृद्ध सुविदित एवं लोकविख्यात है। विमान विधा के क्षेत्र में पुष्पक विमान का नाम स्वतः ही जिह्वा पर आ जाता है। पुष्पक आदि भेद से मान्त्रिक विमान पच्चीस प्रकार के कहे गए है-

"पञ्विंशन्मान्त्रिकाः पुष्पकादिप्रभेदेन।"

(बृहद् विमानशास्त्र, अध्याय-2,सूत्र-2)

वाल्मीकीय रामायण में पुष्पक का स्पष्टतः उल्लेख करते हुए कहा गया है-

"यस्य तत्पुष्पकं नाम विमानं कामगं शुभम्।
वीर्यादावर्जितं भद्रे! येन यामि विहायसम्।।"

(वाल्मीकीय रामायण आरण्य. 48/6)

अतिरिक्त महाराज भोज द्वारा विरचित **'समराङ्गणसूत्र'** नामक ग्रन्थ में भी पारे से उड़ने वाले विमान का उल्लेख किया गया है। देखिए-

"लघुदारुमयं महाविहङ्गं दृढसुश्लिष्टतनुं विधाय तस्य।
उदरे रसयन्त्रमादधीत ज्वलनाधारमधोऽस्य चाग्गिचूर्णम्।।"

(समराङ्गणसूत्र, यन्त्रवि. 31/95)

इसी प्रकार महाराज भोजकृत **युक्तिकल्पतरु** ग्रन्थ के यानप्रस्थान में में भी विमान की चर्चा आती है। राजाओं के पास विमान की उपलब्धता होती थी-

"व्योमयानं विमानं वा पूर्वमासीन्महीभुजाम्।"

(युक्तिकल्पतरु- यानप्र. 50)

प्राचीन ऋषि-महर्षि सभी प्रकार की विद्या कला में पारङ्गत होते थे। उनका ज्ञान, चिन्तन और धर्म और दर्शन वेद-समस्त था। क्योंकि- **"वेदे प्रतिष्ठितम्" (महाभारत)। अर्थात्** वेद में संसार का सारतत्त्व निहित है। इसीलिए धर्मप्रवर्तक महाराज मनु कहते हैं-

"अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।।"

(मनुस्मृति-2/13)

तो, हमारी विमानकला आर्य-संस्कृति या भारतीय संस्कृति की पुरातन कला है, तकनीकि है, विज्ञान है। महर्षि भरद्वाजकृत यह ग्रन्थ-रत्न **(यन्त्रसर्वस्व)** उसी पुरातन परम्परा का संवाहक है। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि आस्तिक-भाव-सम्पन्न थे और उनका प्रत्येक विधान वेद-समस्त और आस्तिकभाव से ओत-प्रोत होता था। उनका प्रत्येक कार्य ईश्वर की स्तुति या मङ्गलाचरण से प्रारम्भ होता था, जिसका निर्वाह कालान्तर के लेखक आज तक कर रहे हैं। ऐसा ही आचार-दर्शन इस ग्रन्थ में भी विद्यमान है। देखिए-

"यद्विमानगतास्सर्वे यान्ति ब्रह्म परं पदम्।
तन्त्वा परमानन्दं श्रुतिमस्तकगोचरम्।।"

(यन्त्रसर्वस्व, वैमानिकप्रकरण,मङ्गलाचरण-1)

वेद का माहात्म्य बताते हुए धर्म, नीति और राजनीति के व्यवस्थापक महाराज मनु कहते हैं कि, **सेना के स्वामी होने और राज्य-शासन की योग्यता वेद का ज्ञाता ही प्राप्त कर सकता है।** यथा-

"सेनापत्यं च राज्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।"

(मनुस्मृति- 12/100)

इसी प्रकार इस विमान-विद्या के प्रवर्तक अथवा आविष्कारक महर्षि भरद्वाज ने भी वेदोदधि का मन्थन करके वेद से विमान-विद्या को सुगम करने के लिए **यन्त्रसर्वस्व** नामक ग्रन्थ-रत्न (जिसका एक भाग यह वैमानिक प्रकरण भी है) नवनीत की भाँति निकालकर लोक कल्याण हेतु परोसा है। वेदों में विमान-विद्या के विधायक अनेक मन्त्र हैं। उनमें से कुछ मन्त्रों का उल्लेख आवश्यक है। यथा- **जो आकाश में उड़ते हुए पक्षियों के स्वरूप को जानता है, वह समुद्रिय-आकाशीय नौकाओं को, विमानों को जानता है-**

"वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पतताम्।
वेदा नावः समुद्रियाः।। (ऋग्वेद-1/25/7)

पुनः कहतै हैं कि- **बाहर से सामान लेकर आने वाला माल वाहक पोत (जहाज) जल-तरङ्गों के उत्पातपूर्ण समुद्र कदाचित् डूबता हुआ, भोगसामग्री के अध्यक्ष को मरते हुए धन को छोड़ते हुए की भाँति छोड़ देता है, तब उस**

व्यापाराध्यक्ष को अश्विनौ ज्योतिर्मय और रसमय दो शक्तियाँ जनसम्पर्करहित बलवती, आकाश में उड़ने वाली नौकाओं से वहन करती हैं, उड़ा ले जाती हैं। देखिए-

"तुग्रो हुए भुज्युमश्विनोदमेधे रयिं न कश्चिन्ममृवां अव
तमूहथुर्नौभिरात्मन्वतीभिरन्तरिक्षप्रुद्भिरपोदकाभिः।।

(ऋग्वेद-1/116/3)

और भी- **अबाध्य रथ-विमान की मूर्धा में लगा हुआ अन्यत् चक्र, जो और चक्रों से अलग है, भूमि वाले चक्रों से अलग है, जिसे दो अश्वनौ शक्तियाँ अलग नियन्त्रित करती हैं और जो आकाश में घूमता है।** यथा-

"न्यघ्न्यस्य मूर्धनि चक्रं रथस्य येमथुः।
परि द्यामन्यदीयते।।" (ऋग्वेद-1/30/19)

महर्षि भरद्वाज ने 8 अध्यायों, 100 अधिकरणों और 500 सूत्रों में रचा था। इसका उल्लेख ग्रन्थकार ने अपने मङ्गलाचरण में स्वयं किया है-

"सूत्रैः पञ्चशतैर्युक्तं शताधिकरणैस्तथा।
अष्टाध्याय-समायुक्तमतिगूढं मनोहरम्।।"

(वैमानिक-प्रकरण,मङ्गलाचरण)

1. जैसा कि पहले भी कहा गया है- महर्षि भरद्वाज से पूर्व और भी विमानशास्त्र के रचयिता हुए हैं। जैसे- नारायणमुनि शौनक, गर्ग, वाचस्पति, चाक्रायणि और धुण्डिनाथ। इनके ग्रन्थ क्रमशः- विमानचन्द्रिका, व्योमयानतन्त्र, यन्त्रकल्प, यानविन्दु, खेटयानप्रदीपिका और व्योमयानार्कप्रकाश हैं। विमान के बनाने वाले विमान-शिल्पियों में विश्वकर्मा, छायापुरुष, मनु, मय आदि हुए हैं। वेदों में विमान के कालद्योतक- **वातरंहा, त्रिबन्धुरेण, त्रिवृता रथेन, त्रिचक्रेण** आदि विशेषणों से युक्त अन्य अनेक मन्त्र हैं। केवल यही नहीं, उस समय के आकाश मण्डल में तो अनेक प्रकार के अद्वितीय विमान विचरण किया करते थे। यह तथ्य प्राचीन ग्रन्थों के अनेक पृष्ठों में झलकता दिखाई देता है। उदाहरण के तौर पर ऋग्वेद के इन मन्त्रों को ही लें- **त्रिबन्धुरेण त्रिवृता रथेन, त्रिचक्रेण**... (1-118-2), **अनेनो वो मरुतो चामो अस्तु**... (6-66-7)। अब ज़रा इनके शब्दार्थों पर ध्यान दें। **त्रिबन्धुरेण**- तीन सीट वाला, **त्रिवृता**- त्रिकोण आकार का, **त्रिचक्रेण**-तीन पहियों वाला। इनमें कोई घोड़ा नहीं होता था; **अरथी**- कोई चालक भी नहीं होता था; **अनवस्**- बिना रुके चलता था; **रजस्तुः** - आकाश में उड़ा करता था। क्या इस रूपरेखा से साफ जाहिर नहीं होता कि यहाँ एक स्वचालित वायुयान की चर्चा हो रही है? ऋग्वेद के **'मधुवाहनः'** और कुछ नहीं, आज की विशेष सुविधा सम्पन्न Deluxe Airbuses हैं। मरुतदेवों के **'स्वचालित अन्तरिक्षगामी यान'** Automatic Airbuses हैं तो **'दिव्य रथ'** आधुनिक जगत के Airships हैं। ऋषि भारद्वाज ने अपनी पुस्तक 'अंशु बोधिनी' में विमान सम्बन्धी और भी अनेक रोचक तथ्यों को उजागर किया है। वे बताते हैं कि उस काल में विमान-चालन के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के ईंधन प्रयोग में लाए जाते थे। जहाँ **'शुक्तुद्गम यान'**- बिजली से चला करता था; वहीं **'अंशुवाह यान'**- सौर ऊर्जा से उड़ने वाला एक Solar विमान था। 'तारामुख यान' चुम्बकीय आकर्षण से उड़ा करता था, तो **'भूतवाह'** का ईंधन अग्नि, वायु और जल हुआ करता था। **'धूमयान'** वाष्प के बल पर उड़ता था, तो **'शिखोदग्म'** की उड़ान का आधार पंचशिखी का तेल था। तो, हम देख सकते हैं कि हमारी वैमानिक तकनीकि कितनी उत्तम कोटि की थी। आज के बहुत से पाश्चात्य-प्रेमी प्राचीन ग्रन्थों की अनुपलब्धता के आधार पर भारतीय वैमानिकी को कपोलकल्पित बताते हैं,यह बहुत खेद की बात है। महर्षि भरद्वाजकृत यन्त्रसर्वस्व के आधार पर हम अन्य ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों पर विश्वास कर सकते हैं। इन लुप्त हो चुके शास्त्रों, ग्रंथों एवं अभिलेखों की पुष्टि विभिन्न शोधों द्वारा की जानी चाहिए थी कि आखिर यह तमाम ग्रन्थ और संस्कृत की विशाल बौद्धिक सामग्री कहाँ गायब हो गई? ऐसा क्या हुआ था कि एक बड़े कालखण्ड के कई प्रमुख सबूत गायब हैं? तत्कालीन ऋषि-मुनियों एवं प्रकाण्ड विद्वानों ने यह कथित कल्पनाएँ क्यों की होंगी? कैसे की होंगी? उन कल्पनाओं में विभिन्न धातुओं के मिश्रण अथवा अंतरिक्ष यात्रियों के खान-पान सम्बन्धी जो नियम बनाए हैं, वह किस आधार पर बनाए होंगे, यह सब जानना जरूरी नहीं था?

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक संस्कृत प्रोफेसर वी.आर. रामचंद्रन दीक्षितार अपनी पुस्तक 'वार इन द एन्शियेंट इण्डिया इन 1944' में लिखते हैं कि आधुनिक वैमानिकी विज्ञान में भारतीय ग्रंथों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने बताया कि सैकड़ों गूढ़ चित्रों द्वारा प्राचीन भारतीय ऋषियों ने पौराणिक विमानों के बारे में लिखा हुआ है। दीक्षितार आगे लिखते हैं कि राम-रावण के युद्ध में जिस सम्मोहनास्त्र के बारे में लिखा हुआ है, पहले उसे भी सिर्फ कल्पना ही माना गया, लेकिन आज की तारीख में जहरीली गैस छोड़ने वाले

विशाल बम हकीकत बन चुके हैं। पश्चिम के कई वैज्ञानिकों ने प्राचीन संस्कृत एवं मोड़ी लिपि के ग्रंथों का अनुवाद एवं गहन अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि निश्चित रूप से भारतीय मनीषियों/ऋषियों को वैमानिकी का वृहद ज्ञान था। यदि आज के भारतीय बुद्धिजीवी पश्चिम के वैज्ञानिकों की ही बात सुनते हैं तो उनके लिए चार्ल्स बर्लित्ज़ का नाम नया नहीं होगा। प्रसिद्ध पुस्तक द बरमूडा ट्राएंगल सहित अनेक वैज्ञानिक पुस्तकें लिखने वाले चार्ल्स बर्लित्ज़ लिखते हैं कि यदि आधुनिक परमाणु युद्ध सिर्फ कपोल कल्पना नहीं वास्तविकता है, तो निश्चित ही भारत के प्राचीन ग्रंथों में ऐसा बहुत कुछ है जो हमारे समय से कहीं आगे है। 400 ईसा पूर्व लिखित ज्योतिष ग्रन्थ में ब्रह्माण्ड में धरती की स्थिति, गुरुत्वाकर्षण नियम, ऊर्जा के गतिकीय नियम, कॉस्मिक किरणों की थ्योरी आदि के बारे में बताया जा चुका है। वैशेषिका ग्रन्थ में भारतीय विचारकों ने परमाणु विकिरण, इससे फैलने वाली विराट ऊष्मा तथा विकिरण के बारे में अनुमान लगाया है। (स्रोत: डूम्स डे, 1999, चार्ल्स बर्लित्ज, पृष्ठ 123-124)।

निष्कर्षतः हम विश्वासपूर्वक यह कह सकते हैं कि हमारे ऋषि-मुनि ज्ञान-विज्ञान और तकनीकि से सम्पन्न थे। प्राचीन ज्ञान-विज्ञान की थाती पर ही आधुनिक युग का चिरस्थाई विकास सम्भव है। हम आधुनिक समाज और राष्ट्र के निर्माण में प्राचीन मूल्यों की अनदेखी नहीं कर सकते। हमें अपने प्राचीन ग्रन्थों और ग्रन्थकारों के प्रति पूर्ण श्रद्धाभाव प्रकट करते हुए उनके द्वारा रचित ग्रन्थों के प्रतिपाद्य विषय का विद्वानों के सान्निध्य में बैठकर अध्ययन करना चाहिए न कि उन पर सन्देह। जम्बूद्वीपस्थ भरतखण्ड (भारत वर्ष) आर्य संस्कृति का केन्द्र है और यहाँ के ज्ञान-विज्ञान से हमें अपने आचरण की शिक्षा लेकर विकास का पथ प्रशस्त करना चाहिए। इसीलिए महाराज मनु के यह उद्घोष किया है कि-

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।"

(मनुस्मृति-2/17)

Corresponding Author: **Dr. Baikuntha Nath Shukla**
E-mail: anubaikunth.7375@gmail.com
Received: 2 April 2025; Accepted: 17 May 2025; Available online: 31 May 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License